

400 वर्ष पहले एक विदेशी कंपनी ने समूचे देश को अपना गुलाम बनाया। आज ऐसी 5000 से अधिक विदेशी कंपनियाँ देश में अपना व्यापार कर रही हैं। कहीं हम अपनी आज़ादी को फिर से ताक पर तो नहीं रख रहे? प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को स्वयं भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4MVJxRWthMXlITzQ/edit?usp=sharing

विदेशी कंपनियाँ दो तरह के करार करके भारत में व्यापार करती हैं - पहला तकनीकी आधार पर और दूसरा पूँजी के आधार पर। तकनीकी आधार पर कंपनियाँ हैं मारुति-सुजुकी आदि। पूँजी के आधार पर कंपनियाँ हैं जैसे Bharati-Axa, Tata AIG, Unilever, Reckitt & Coleman, Honda, Ford आदि। इन कंपनियों का हमारे देश में व्यापार करने से सबसे बड़ा नुकसान यह है कि जब हम अपनी दैनन्दिनी की वस्तुओं के लिए अधिकतर विदेशी कंपनियों पर निर्भर होते हैं तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था गुलाम हो जाती है!

1993 में भारत सरकार ने उदारीकरण की नीति अपनाई और धड़ल्ले से विदेशी कंपनियों को देश में घुसाना शुरू कर दिया। सिर्फ केन्द्र सरकार ही नहीं, राज्य सरकारें भी विकास के नाम पर विदेशी कंपनियों को अपने देश में व्यापार करने के लिए आमंत्रित करती हैं। जब पूछा जाता है कि इस भक्ति का कारण क्या है तो सरकारें निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करती हैं:

भारत के पास पूँजी की कमी है। जब ये कंपनियाँ भारत आती हैं तो अपने साथ पूँजी लाती हैं। - सच्चाई तो यह है कि विदेशी कंपनी पूँजी लाती नहीं है, यहाँ से ले जाती है। एक मोटी सी बात समझने वाली है कि किसी भी कंपनी को दूसरे देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में दिलचस्पी क्यों होगी? व्यापार का उद्देश्य लाभ कमाना होता है। अगर कोई कंपनी भारत में आकर व्यापार करती है तो निश्चित तौर पर वह एक बड़े लाभान्श की आशा रखती है और अगर वह वर्षों से व्यापार कर रही है तो साफ़ जाहिर होता है कि यह बड़ा लाभान्श वह हर वर्ष भारत से निकाल कर बाहर ले जा रही है वरना वो भारत में इतने वर्ष टिकती ही क्यों? RBI के आंकड़े बताते हैं कि हर वर्ष ये कंपनियाँ भारत से 3 गुणा लाभ कमाकर बाहर ले जाती हैं। यानी अगर वे 1 dollar यहाँ लगाती हैं तो अगले वर्ष 3 dollar कमा लेती हैं! वो देश भारत को क्या पूँजी लाकर देंगे जो खुद कर्जदार हैं। आपको शायद ये

पता न हो कि बीती आर्थिक मंदी जिसमें अमरीका सहित यूरोप के कई देश शिकार हुए इस बात का सबूत थी कि ये सारे देश विश्व बैंक के कर्जदार हैं! पिछले 5 दशकों में अमरीका के बैंकों ने वहाँ के नागरिकों को जो कर्ज बाँटा, उसमें से बहुत बड़ा हिस्सा वापिस ही नहीं मिला जिसकी वजह से वहाँ पूँजी की कमी हो गई और अमरीका को विश्व बैंक के आगे हाथ फैलाने पड़े! ऐसा देश कहाँ से भारत जैसे विशाल देश को आर्थिक सहायता दे सकता है? ये कंपनियाँ भारत से प्राप्त लाभ को ही भारत में लगाते हैं।

ब्रिटेन और हॉलैंड की एक संयुक्त कंपनी जिसका नाम है Unilever जब भारत में आई तो उसने अपना निवेश केवल 33 लाख रूपए से किया। 2000 के दशक में इस कंपनी का कुल मुनाफा, जो कि सिर्फ accounted था, वो था 14740 करोड़! इसमें से 200 करोड़ तो वो यहाँ से निकालकर बाहर ले जा चुके हैं। इसका मतलब 33 लाख लगाकर 200 करोड़ का मुनाफा!! जो बचा हुआ धन है वो भी भारत का अपना नहीं है, जब इस कंपनी की मर्जी होगी तब वो यह सारा पैसा बाहर ले जा सकती है और अगर ऐसा हुआ तो सीधा सीधा हमारी अर्थव्यवस्था से 14000 करोड़ बाहर निकाल जाएंगे! ये रकम छोटी नहीं है! ध्यान रहे उनकी लागत केवल 33 लाख ही थी! एक और ऐसी कंपनी है जिसका नाम है कोलगेट पामोलिव। यह अमरीका की कंपनी है जिसने भारत में 13 लाख लगाये और अब हर वर्ष 231 करोड़ रूपए छाप कर यहाँ से हज़ारों करोड़ रूपए अमरीका बाहर भेज चुकी है! Novartis नाम की कंपनी ने भारत में 15 लाख रूपए लगाये और अब हर साल इसका 94,46,00,000 रूपए का turnover है। फिलिप्स नाम की हॉलैंड की एक कंपनी ने 1.5 करोड़ रूपए भारत में लगाये और अब इसका कुल लाभ 190 करोड़ वार्षिक है। Goodyear नाम की टायर बनाने वाली कंपनी ने 2,37,00,000 रूपए लगाये और अब इसका वार्षिक लाभ 40,00,00,000 रूपए है। Glaxo नाम की एक ब्रिटिश कंपनी है जिसने पूँजी के तौर पर 8,40,00,000 रूपए लगाये और अब प्रतिवर्ष 5,37,00,00,000 रूपए छाप रही है! Pfizer नाम की अमेरिकन कंपनी 2,90,00,000 रूपए से भारत में निवेश करती है और प्रतिवर्ष 3,38,00,00,000 करोड़ रूपए बना रही है। Abort India नाम की कंपनी ने 1,90,00,000 रूपए लगाये और अब 68,00,00,000 रूपए हर साल यहाँ से कमा रही है। सिगरेट बनाने वाली एक कंपनी ITC (Indian Tobacco Company), ने भारत में 37 करोड़ रूपए लगाये और अब ये कंपनी 3120 करोड़ रूपए वार्षिक दर से कमा रही है। यही नहीं अब ये भारत के कई और व्यापारों में भी घुस चुकी है जैसे कपड़े, आटा (आशीर्वाद ब्रांड) आदि। इसका असली नाम है American Tobacco Company (ATC) | ये कुछ उदाहरण थे अभी ऐसी कई कंपनियाँ हैं जैसे Bata, Nestle आदि।

इन कंपनियों के भारत आने से भारत का निर्यात बढ़ता है। - अंग्रेजों ने भारत के निर्यात पर एक सर्वेक्षण कराया जिसके लिए 1813-1840 के आंकड़े लिए गए। इस सर्वेक्षण में पता चला कि दुनिया के निर्यात में भारत की भागीदारी 33% है और इस 33% निर्यात में अंग्रेजों का कुल योगदान था मात्र 3.64%! वर्तमान सदी के सरकारी आंकड़े नीचे दिए जा रहे हैं:

1938 में ये योगदान हुआ 4.5%।

1950 में ये योगदान हुआ 2.2%।

1955 में ये योगदान हुआ 1.5%।

1960 में ये योगदान हुआ 1.2%।

1965 में ये योगदान हुआ 1%।

1970 में ये योगदान हुआ 0.7%।

1975 में ये योगदान हुआ 0.5%।

1985 में ये योगदान हुआ 0.1%।

1990 में ये योगदान हुआ 0.05%।

1991 में ये योगदान हुआ 0.045%।

1992 में ये योगदान हुआ 0.042%।

1993 में ये योगदान हुआ 0.04%।

1994 में ये योगदान हुआ 0.038%।

2008-9 में ये योगदान हुआ 0.5%।

इन आंकड़ों से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि गुलामी के दौर में जब सिर्फ एक विदेशी कंपनी इस देश में थी तब हम 33% निर्यात करते थे और आज जब इस देश में 5000 से अधिक विदेशी कंपनियाँ मौजूद हैं तो हमारा निर्यात मात्र ०.5% ही रह गया है! सरकारी आंकड़े ही सरकार की नीतियों की पोल खोल रहे हैं!! वास्तविकता यह है कि विदेशी कंपनियों को लाभ भारत में आयात से

होता है न कि निर्यात से! विदेशी कंपनियाँ हमारी सरकारों पर रूपए के अवमूल्यन का दबाव बना कर रखती हैं क्योंकि इससे उनके देश के विदेशी मुद्राकोष में वृद्धि होती है। जब 1 डॉलर का तैयार माल भारत में 50 रूपए में बिकता है तो कोई मूर्ख भी समझ सकता है कि लाभ किसे हो रहा है! 1947 में भारत का रुपया 1 अमरीकी डॉलर के बराबर था! आज इसकी औकात 55 रूपए 1 अमरीकी डॉलर के बराबर हो गई है!

विदेशी कंपनियों के आने से भारत तकनीकी रूप से विकसित होगा। - आपको यह जानकर हैरानी होगी कि 90% विदेशी कंपनियाँ भारत में आकर शून्य तकनीकी के उत्पाद बनाती हैं जैसे जूते, चप्पल, आटा, चटनी, अचार, shampoo, तेल, पानी की बोतलें, चाय, मसाले आदि। अब आप ही बताइए इन सब उत्पादों को बनाने में कौन सी हाई टेक तकनीक उपयोग होती है? इनको पैदा भारतीय मजदूर करते हैं और ये कंपनियाँ डिब्बों और पैकेटों में बंद करके हमें ही बेचती हैं। इन डिब्बों को बनाने में कौन सी तकनीक उपयोग होती है? शेष 10% कंपनियाँ भारत में तकनीकी समझौतों में व्यापार करती हैं पर उनमें भी कोई विशेष तकनीक नहीं होती। जैसे Hero Honda, Kawasaki, Suzuki, Volkswagen, FIAT, Leyland आदि। सबसे उच्च तकनीक जिसे कई बार हम Rocket Science कह देते हैं, वो सम्पूर्ण स्वदेशी है जैसे सुपर कंप्यूटर, ISRO, DRDO ये सब संस्थाएं स्वदेशी हैं। ज्यादातर विदेशी कंपनियाँ पुरानी तकनीक लाकर भारत में बेचती हैं। जैसे रासायनिक खाद और कीटनाशक, बम और हथियार बनाने में इस्तेमाल होने वाले रसायनों से तैयार होते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हथियारों के जखीरे को खत्म करने के लिए रासायनिक खाद तैयार करने की फैक्ट्री डाली और तैयार माल को भारत जैसे देशों में निर्यात किया। धीरे-धीरे उन्होंने ये तकनीक भारत जैसे देशों को दे दी और अपने यहाँ से ऐसी फैक्ट्री बंद कर दीं।

इसी तरह जिन रसायनों को वैश्विक संस्थाओं ने A class poison तथा B class poison घोषित कर दिया है, ऐसे रसायन अभी भी दवाओं के रूप में हम खा रहे हैं। Justice Hathi commission की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत जैसे देश को केवल 117 अलोपथी दवाइयों की आवश्यकता है परंतु हमारे देश में 84,000 दवाइयाँ बिक रही हैं जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हमारे लिए ज़हर हैं! WHO के हवाले के अनुसार भारत को केवल 250 अलोपथी दवाइयों की आवश्यकता है!

इसी तरह जनसंख्या की रोकथाम के लिए गर्भ निरोधक उपाय जो ये विदेशी कंपनियाँ बेचती हैं वो कम जानलेवा नहीं हैं। इनमें से कई कंपनियाँ महिलाओं के लिए जो टीके बनाती हैं उन पर अमरीका में प्रतिबंध हैं। ये टीके न सिर्फ महिलाओं में होने वाले मासिकधर्म को अनियमित कर देते हैं बल्कि

गर्भाशय का कैंसर भी छोड़ देते हैं! वहीं कंडोम बनाने वाली कंपनियाँ हर साल 100 करोड़ कंडोम बेचती हैं जिनका लक्ष्य है 100 करोड़ कंडोम एक दिन में बेचना! भारत सरकार की मदद से वो ऐसा प्रचार करती हैं कि चाहे कुछ भी करें पर कंडोम अवश्य उपयोग करें! अगर भारत सरकार में थोड़ी भी शर्म होती तो पहले अपनी शिक्षा व्यवस्था ठीक करती और देश में ऐसा वातावरण देती कि लोग संयमी होते और अपने जीवन साथी के प्रति वफादार होते, फिर ऐसी चीज़ों की हमें स्वतः ही आवश्यकता न होती! चारित्रिक पतन के बल पर अपना धंधा चलाने का नाम है ये कंडोम! एड्स केवल एक बहाना है।

जब ये कंपनियाँ भारत में कारखाने लगाती हैं तो लोगों को रोज़गार मिलता है जिससे गरीबी कम होती है। - 1948 में भारत ने अपनी पहली आर्थिक नीति तय की। नेहरू ने लोकसभा में भाषण दिया कि भारत विदेशी शासन के दौरान लुट चुका है और अब इसे पूँजी की आवश्यकता है। इस कमी को विदेशी कंपनियाँ ही पूरा कर सकती हैं। इस नीति के आधार पर 126 विदेशी कंपनियाँ भारत में घुसाई गईं! सरकारी आंकड़ों के अनुसार उस समय भारत में 4.5 करोड़ लोग गरीब थे! आज आज़ादी के 65 सालों के बाद भारत में 5000 से ज्यादा विदेशी कंपनियाँ हैं तो सरकारी तर्क के अनुसार हमारे पास अब पूँजी ज्यादा है जिससे गरीबी निश्चित तौर पर कम होनी चाहिए। लेकिन सत्य ये है कि आज गरीबों की संख्या भारत में 84 करोड़ तक पहुँच गई है! 21 गुणा यह बढ़ चुकी है और ऐसा तभी संभव है जब पूँजी आने के बजाय बाहर जा रही हो! यह भी सरकारी आंकड़ा ही था!

काला धन भ्रष्टाचार और व्यवस्था परिवर्तन के महाअभियान भारत स्वाभिमान से जुड़े - स्वामी रामदेव

Join movement against corruption and black money bharat swabhiman - swami ramdev
